02952-221909 rjvs10@yahoo.in www.rjvs.in /rjvs.ngo

“हौसलों की उड़ान”

त्रैमासिक पत्रिका
अप्रैल-जून 2025
अंक 02

13,750 एकल महिलाओं की आवाज़ पहुँचेगी मुख्यमंत्री तक..

20 जिलों के 55 ब्लॉकों में अपराजिता कार्यकर्ताओं के सहयोग से 13750 एकल महिलाएं पोस्टकार्ड भरकर मुख्यमंत्री को मांग पत्र भेजेगी । इस पहल के तहत कार्यकर्ताओं ने पंचायत स्तर पर जाकर महिलाओं की समस्याएं सुनी, उन्हें पोस्टकार्ड पर लिखवाया और फिर यह पोस्टकार्ड मुख्यमंत्री को भेजे।
इस अभियान को "महिला सशक्तिकरण पखवाड़ा" के रूप में 15 जून से 23 जून 2025 तक मनाया गया। इस अवधि में हर पंचायत से औसतन 250 पोस्टकार्ड एकत्र किए गए, जिनमें महिलाओं ने अपनी प्रमुख सामाजिक, आर्थिक, चिकित्सा एवं स्वास्थ्य संबंधी समस्याओं को लिखा।

लर्निंग कम्युनिटी: बेटियाँ बनीं बदलाव की मिसाल..

कुंवारिया गाँव की गलियाँ पहले भी चहल-पहल से भरी थीं, लेकिन इस बार आवाज़ें कुछ अलग थीं। यह किशोरियों की आवाज़ थी, जो सवाल भी कर रही थीं और समाधान भी ढूंढ रही थीं।
सबकुछ शुरू हुआ जब कुछ लड़कियाँ झिझकते हुए मंच पर आईं — किसी ने कहा "हमारे स्कूल में सैनिटरी नेपकिन की व्यवस्था क्यों नहीं?", किसी ने पूछा "फियावड़ी हाईवे पर सुरक्षा कब होगी?"
धीरे-धीरे ये सवाल नारे बने, नारे बैठकों में बदले, बैठकों से रैलियाँ निकलीं और नुक्कड़ नाटक बनकर पूरे गाँव को झकझोरने लगे।
इन बेटियों ने न सिर्फ आवाज़ उठाई, बल्कि सरकार से मिलकर बैरिकेड्स लगवाए, नेपकिन मशीन शुरू करवाई और बाल विवाह के खिलाफ चेतना जगाई।

"नारी शक्ति अवार्ड"

संस्थापिका श्रीमती शकुंतला पामेचा को सामाजिक कार्य में उल्लेखनीय योगदान के लिए "नारी शक्ति अवॉर्ड 2025" से सम्मानित किया गया। यह सम्मान उन्हें 27 अप्रैल को नई दिल्ली के होटल रैडिसन ब्लू में आयोजित समारोह में सुप्रसिद्ध अभिनेत्री श्रीमती सुधा चंद्रन द्वारा प्रदान किया गया। समारोह में देशभर की 35 प्रेरणादायी महिलाओं को सम्मानित किया गया, जिनमें राजस्थान से एकमात्र प्रतिनिधि के रूप में श्रीमती पामेचा को "Compassionate Leadership in Social Work" श्रेणी में यह पुरस्कार प्राप्त हुआ। यह सम्मान न सिर्फ उनका व्यक्तिगत गौरव है, बल्कि हमारे संस्थान व राजसमंद जिले की सामाजिक चेतना और वर्षों से किए जा रहे प्रयासों की भी पहचान है।

स्थापना दिवस पर हुआ महिला सुरक्षा एवं सलाह केन्द्र का उद्घाटन..

23वां स्थापना दिवस गंगापुर (भीलवाड़ा) में विधायक श्री लादूलाल पितलिया की अध्यक्षता में धूमधाम से मनाया गया। कार्यक्रम में संस्थान की गौरवमयी यात्रा के पलो को याद किया तथा संस्थान द्वारा अभी तक समुदाय हेतु किये गए उपलब्धिपूर्ण कार्यों का ब्यौरा प्रस्तुत किया । कार्यक्रम में महिला अधिकारिता विभाग, भीलवाड़ा के सहयोग से संचालित महिला सुरक्षा एवं सलाह केन्द्र का उद्घाटन भी किया गया। पुलिस विभाग की भागीदारी से यह केन्द्र एक समन्वित प्रयास के रूप में हिंसा की रोकथाम हेतु कार्य करता है। महिलाओं व बच्चों के कानूनों पर बनी पुस्तिकाओं का विमोचन भी किया गया । इस पुस्तिका में क़ानूनी जानकारियों को संक्षित व सरल भाषा में तैयार किया गया है । कार्यक्रम में स्थानीय प्रशासनिक अधिकारीयों की भी भागीदारी रही।

एक नयी पहल - "Me Decide"

भीलवाडा जिले में किशोरी बालिकाओं की बाल विवाह कुप्रथा पर समझ बढ़ाने हेतु..

भीलवाड़ा जिले के सहाड़ा ब्लॉक के दो गांवों की 50 किशोरियां गर्ल्स नॉट ब्राइड की पहल से बाल विवाह जैसी सामाजिक बुराई की जड़ों को समझ रही है। इन किशोरियों ने गहराई से यह जाना कि कैसे बाल विवाह न केवल उनकी शिक्षा, स्वास्थ्य और स्वतंत्रता को प्रभावित करता है, बल्कि स्वयं व पूरे समुदाय के विकास में भी बाधा बनता है।

इस समझ के साथ उन्होंने लिंग-समानता के विचार को आत्मसात किया और इसे अपने व्यवहार, संवाद और पहल में शामिल कर रही है। समुदाय के साथ मिलकर बाल विवाह के खिलाफ जागरूकता फैलाने, खुले संवाद स्थापित करने, और सामूहिक कार्रवाई के रास्ते तलाशना शुरू किया है।

किशोरियों ने न केवल समस्याओं को पहचाना, बल्कि उनके समाधान के लिए ठोस कदम भी सुझाए – जैसे पंचायत से संवाद, रैलियां, नुक्कड़ नाटक, नारा लेखन और माता-पिता व समुदाय के साथ बैठकों का आयोजन।

बदलाव की कहानियां

“जहाँ महिलाएं साथ हों, वहाँ अन्याय नहीं टिकता”

उम्र 55, रावतमाल की एक साधारण लेकिन निडर महिला। वर्षों की मेहनत से अर्जित ज़मीन की मालिक। दिलदार इतनी कि, अपनी आधी ज़मीन पशुपालन अस्पताल बनाने के लिए सरकार को दान दे दी। बाउंड्रीवाल बन गई, लेकिन निर्माण आगे नहीं बढ़ा — और यहीं से कहानी ने मोड़ लिया।

गाँव के ही एक प्रभावशाली व्यक्ति पूनम सिंह की उस खाली पड़ी ज़मीन पर नज़र थी। मौका देख कर उसने जमीन पर अवैध कब्जा कर लिया। जब कोयली देवी ने इसका विरोध किया, तो जवाब में उन्हें गालियाँ और धमकियाँ मिलीं।

पर कोयली देवी अकेली नहीं थीं। उन्होंने तुरंत संगठन सदस्यों को आपबीती सुनाई । सभी महिलाएँ साथ आईं, उन्होंने मिलकर ज़मीन के दस्तावेज़ों को जांचा, राजस्व रिकॉर्ड खंगाले, और यह स्पष्ट हुआ — जमीन अब भी कोयली देवी की ही है।

फिर क्या था?

सदस्यों ने उन्हें एफआईआर दर्ज कराने की सलाह दी, और पुलिस में मामला दर्ज हुआ। पूनम सिंह को अपनी गलती स्वीकार करनी पड़ी, और अंततः जमीन कोयली देवी को वापस मिल गई।

कोयली देवी
एकल नारी संगठन सदस्य

“किशोरियाँ बोलीं – पहली बार छुआ कंप्यूटर”

राजसमन्द के एक छोटे से कस्बे में जब सुकून परियोजना शुरू हुई थी, तब किसी ने नहीं सोचा था कि एक दिन किशोरियाँ खुद चलकर कार्यालय आने लगेंगी — न किसी डर के साथ, न किसी संकोच के।

पहला बदलाव चुपचाप शुरू हुआ -
एक दिन दो किशोरियाँ ऑफिस आईं और कोने में रखे अख़बार को पढ़ने लगीं। फिर धीरे-धीरे एक ने बाल विवाह पर बनी किताब माँगी, दूसरी ने क़ानूनी जानकारी की पुस्तक उठाई। देखते ही देखते यह एक नई आदत बन गई — किशोरियाँ रोज़ आकर अख़बार पढ़तीं है, किताबों में खो जातीं, और सवालों से दफ्तर की दीवारें गूंजने लगतीं।

दूसरा नवाचार और भी दिलचस्प था -
मैंने (वनिता) देखा कि कुछ लड़कियाँ कम्प्यूटर स्क्रीन को उत्सुकता से देखती हैं, लेकिन छूने से डरती हैं। बस, उसी पल मैने निर्णय लिया — "अब, सबको कम्प्यूटर सिखाउंगी!"

अब ऑफिस का एक कोना किशोरियों की डिजिटल क्लास बन गया। कर्सर पकड़ने से लेकर टाइपिंग और गूगल तक का सफर, किशोरियाँ मज़े से तय करने लगीं। अब वह कार्यालय जो ईमित्रा व महिला परामर्श केन्द्र” माना जाता था, किशोरियों के लिए सपनों की पाठशाला बन चुका है। वहाँ वे किताबें पढ़ती हैं, समाचारों पर चर्चा करती हैं, कम्प्यूटर चलाती हैं और अपने मन की बात खुलकर कहती हैं। यह सिर्फ नवाचार नहीं था, यह बदलाव की वो शुरुआत थी जो दरवाज़ा नहीं, सोच खोलती है। सुकून अब सिर्फ एक परियोजना नहीं, एक माहौल है — जहाँ किशोरियाँ कहती हैं: "हम सीखने आई हैं!"

“बागोल की महिलाएं बनी मिसाल”

बागोल गाँव में इन दिनों शादीयों की धूम थी। एक मायरा और दो-दो बारातें आने वाली थीं। घर-घर में हलचल थी, तैयारी थी, लेकिन... रास्ते में टॉयलेट का पानी बह रहा था! जहाँ बारात रुकनी थी, वहीं कीचड़ का राज था। गाँव वालों ने कई बार पंचायत में कहा, पर न कोई सुनवाई, न सफाई। दिन बीतते गए, और शादी सिर पर आ गई। फिर सोचा, अब बस!

राजसमन्द महिला मंच की बहनों ने कमर कसी और 181 पर कॉल घुमाया!

बोला, “हम महिला मंच से बोल रहे हैं, हमारे गाँव की इज्जत डूब रही है!” शिकायत राजस्थान संपर्क में दर्ज हो गई। अब तंत्र भी हरकत में आया। सरपंच ने JCB मंगाई। नाला साफ़ हुआ, गड्ढों में मिट्टी डाली गई, टॉयलेट का पानी गायब हुआ और गाँव एकदम साफ़-सुथरा हो गया। बारात आई, बाजे बजे, और महिला मंच की ये कहानी मिसाल बन गई।

शादी के घर वालों व गाँव वालों की जुबां पर एक ही नाम था - **“राजसमन्द महिला मंच”**

देऊ बाई
महिला मंच कार्यकर्त्ता

"बाल विवाह एक सामाजिक बुराई है, जो हमारे बच्चों के भविष्य को अंधकार में धकेल देती है। राजसमंद जन विकास संस्थान द्वारा इस कुप्रथा के खिलाफ किया जा रहा कार्य सराहनीय है। ग्राम स्तरीय बाल संरक्षण समिति को सशक्त करके बाल विवाह में कमी ला सकते है तथा समाज में जागरूकता लाकर हम अपने बेटियों और बेटों को सुरक्षित और उज्ज्वल भविष्य दे सकते हैं।"

श्री भगवान सिंह
सरपंच, शिशोदा

"जब मैंने पुलिस थाने में रखा कदम"

"मैंने हमेशा पुलिस थाने को दूर से देखा था – संकोच और फिल्मी कहानियों से बना एक डराने वाला स्थान लगता था वहाँ सिर्फ अपराधी जाते हैं या फिर कुछ बुरा हुआ हो तभी लोग जाते हैं। लेकिन उस दिन, जब हमारी दीदी ने कहा कि हम एक्सपोज़र विजिट पर पुलिस थाने चलेंगे, तो दिल में एक डर और उत्सुकता साथ-साथ थी।

थाने के गेट से अंदर कदम रखते ही सबकुछ अलग लगा – सख्त दीवारें, खाकी वर्दी में पुलिसकर्मी, लेकिन इस बार वो डाँटने या पकड़ने नहीं, हमें समझाने के लिए बैठे थे। एक महिला पुलिस अधिकारी ने मुस्कुराते हुए कहा – 'थाना डरने की नहीं, भरोसे की जगह है।' उन्होंने हमें हमारी सुरक्षा के अधिकार बताए, यह भी समझाया कि कैसे महिलाएं थाने में अपनी शिकायत दर्ज कर सकती हैं, और यह भी कहा की अच्छे लोगो के लिए पुलिस दोस्त है। पहली बार समझ आया कि पुलिस सिर्फ सख्त नहीं होती, वो सहायक भी हो सकती है।

अब मैं सोचती हूँ, अगर कभी कुछ गलत हो, तो चुप रहने के बजाय मैं वहाँ जाऊँगी, बात करूँगी। और हाँ – अब जब भी कोई कहे "थाना", तो मेरे चेहरे पर डर नहीं, आत्मविश्वास आ जाता है।"

लर्निंग कम्युनिटी की बालिकाओं ने न केवल अपने गाँव की समस्याओं को पहचाना, बल्कि उन्हें सार्वजनिक मंचों पर उठाकर समाधान भी सुनिश्चित किया। ये पहल सिर्फ एक शुरुआत नहीं थी, बल्कि एक सोच थी – "समस्या बताकर नहीं, हल करके ही रुकेंगे!"

पानी की दिक्कत हो, बाल विवाह का मुद्दा हो या स्कूल में सुविधाओं की कमी – इन किशोरियों ने हर मोर्चे पर आगे बढ़कर नेतृत्व किया और पूरे समुदाय को साथ जोड़कर बदलाव की दिशा में काम किया। संस्थान के प्रयासों को सलाम है। यह सहयोग और चेतना का ऐसा संगम है, जिसने गाँव में उम्मीद और हिम्मत दोनों को जन्म दिया है।

श्री ललित श्रीमाली
सरपंच, कुंवारिया

पाठकों की प्रतिक्रियाएं

मुबारक शकुंतला दी. पत्रिका बहुत प्रभावशाली है
नसीम खान (CEQUIN)

एक अच्छी पहल के लिए आपकी टीम को बधाई।
R. D. Sharma (दूसरा दशक)

आपके काम की उत्कृष्ट प्रस्तुति, बधाई।
आभा (जागोरी ग्रामीण)

Wishing you more power for continued collective action.
Neeta (ANANDI)

कृपया आपके विचार व प्रतिक्रियाएं हमसे साझा करें

राजसमन्द जन विकास संस्थान द्वारा प्रकाशित
संपादन: शकुंतला पामेचा, मार्गदर्शन: अरविन्द कुमार पामेचा,
लेखन एवं डिजाईन: भूपेन्द्र सिंह राजपुत, सहयोग: समस्त संस्थान सदस्य